International Journal of Applied Research 2019; 5(6): 473-474

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2019; 5(6): 473-474
www.allresearchjournal.com
Received: 25-04-2019
Accepted: 29-05-2019

**किरण कुमारी**
+2 संगीत शिक्षिका, +2 उच्च विद्यालय, कल्याणपुर, समस्तीपुर, बिहार, भारत

**Corresponding Author;**
**किरण कुमारी**
+2 संगीत शिक्षिका, +2 उच्च विद्यालय, कल्याणपुर, समस्तीपुर, बिहार, भारत

# भारतीय लोकसंगीत की गौंरवशाली समृद्ध संगीत परंपरा – मैथिल लोकगीत

## किरण कुमारी

**सारांश**
लोकजगत में निर्मित, प्रचलित और संरक्षित गीत को लोकगीत की संज्ञा दी गई है। लोकगीत लोक के गीत हैं अर्थात लोक रचित लोक विषयक और लोक में प्रचलित गीत। सांस्कृतिक धरोहर स्वरूप यह श्रुति साहित्य लोक जगत का प्रतिनिधि साहित्य है। लोकगीत जन सामान्य के सामुहिक उल्लास की सहज अभिव्यक्ति है। सृष्टि के आरंभ से ही प्रकृति के उन्मुक्त प्रांगण में कभी स्वतः स्फूर्त आवेश से, कभी अपने देवताओं की संतुष्टि के लिए मनुष्य सहज आनन्द के वशीभूत होकर सामुहिक रूप से गीतों का सृजन करता आया है। इस प्रकार जब गाँवो के लोग किसी खुषी के मौके पर सामुहिक रूप से मिलजुल कर गीत गाते हैं तब उसे लोकगीत का नाम दिया जाता है। ये लोकगीत किसी नियम से बंधे हुए नहीं होते है अपितु परम्परा ही इनका आधार होती है। पारंपरिक रूप से यह गीत प्रकार मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में कन्ठान्तरित होता रहता है। इन लोकगीतों में उस देश या प्रदेश की सांस्कृतिक परम्परा के दर्शन होते है। यह हमारे तत्कालीन समाज की सभ्यता, संस्कृति, उत्थान–पतन, सुख–दुख, हर्ष–विषाद आदि का एक तरह से एलबम हैं। इनके माध्यम से उस प्रदेश या जनजाति की प्रकृति, कला, संस्कृति, सरलता, सामाजिक स्तर, रीति–रिवाज, धर्म आदि सभी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं। हमारे देश में सभी प्रांतो की अपनी–अपनी लोकगीतों की समृद्ध परंपरा है। मैथिली में लोकगीतों का अक्षय भंडार है। मिथिला का परिवेश संगीतमय है। इसकी अपनी सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा रही है। भारतवर्ष की सभ्यता, प्राचीन संस्कृति और परंपरा को सुरक्षित और अक्षुण्ण रखने में मिथिला का योगदान प्रमुख रहा है।

**मूल शब्दः** लोकसंगीत, संगीत परंपरा, मैथिल लोकगीत

**प्रस्तावना**
मैथिल लोकगीत मैथिल सभ्यता और संस्कृति की धरोहर है जिसे स्थूल रूप से विषय और संदर्भ के आधार पर तीन कोटि में विभाजित किया जा सकता है – भक्तिपरक, संस्कारपरक और सामयिक लोकगीत। लोकजगत में आदिकाल से ईश्वर की परिकल्पना है तथा सुख की प्राप्ति और दुःख से निवृत्ति हेतु लोग ईश्वराधना में तत्पर रहते है। ईश्वर दो रूप में परिकल्पि है – सगुण और निर्गुण। सगुण स्वरूप में ईश्वर की अनेकानेक अवतारी स्वरूप की आवधारण लोकजगत में गृहीत है और उनके रूप, षील, स्वभाव, लीला, धाम तथा भक्त के हृदय की आकांक्षा, दीनता, आत्मनिवेदन आदि को लोकगीत अभिव्यक्ति प्रदान करता रहा है। मैथिली के भक्तिपरक लोकगीत में गोसाउनी गीत सबसे महत्त्वपूर्ण है। इसमें माँ भगवती की स्तुति की जाती है तथा उनके ध्यान के साथ भक्तों के सांसारिक दुःख और क्लेश को दूर करने की प्रार्थना की जाती है।
देवाधिदेव महादेव मिथिला के अन्य सर्वाधिक लोकप्रिय देव के रूप में मान्य है। इनको भोलानाथ कहा जाता है तथा आशुतोष होने के कारण इन्हें जल, फूल, बेलपात और आकधतुर मात्र से संतुष्ट माना जाता है। भक्त अपनी दीनदशा का वर्णन कर शिव से संकट निवारण हेतु प्रार्थना करते है। लोकगीत के इस प्रकार को नचारी कहते है। शिव से संबद्ध दूसरे प्रकार के लोकगीत को महेषवाणी कहा जाता है। गीत के इस प्रकार में शिव के वैवाहिक प्रकरण और पारिवारिक जीवन का वर्णन रहता है। मैथिली भक्तिपरक लोकगीत का एक प्रकार कीर्त्तन भी है। कीर्त्तन सामान्यतः सामुहिक रूप से गेय है और इसमें भगवान के विभिन्न अवतार राम, कृष्ण, हनुमान, गणेश एवं अन्य देवी –देवताओं के गुण, ऐश्वर्य, लीला आदि का वर्णन रहता है। चूँकि मिथिला का सांस्कृतिक परिवेश संगीतमय है, इसलिए यहाँ बच्चे के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त अनेकानेक संस्कार विधान हैं जिसमें जन्म संस्कार, मुंडन, उपनयन, विवाह आदि प्रमुख हैं। इन अवसरों पर विभिन्न प्रकार के लोकगीतों का गायन होता है, जिसमें लोकजीवन के उल्लास और आनन्द की अभिव्यक्ति निहित होती है।
जन्म संस्कार के गीत में सोहर और खेलौना गाया जाता है। सोहर लोकगीत मे आसन्न प्रसवा की षरीरयष्टि, प्रसव वेदना तथा सन्तान प्राप्ति के उल्लास और उछाह का वर्णन प्रमुख होता है।

इसी प्रकार लोकगीत में राम, कृष्ण, सीता आदि को आलम्ब बना *संतानोत्पत्ति* की लालसा, संतान के अभाव में दम्पत्ति की चिन्ता, सन्तानोत्पत्ति के बाद पौनी–पसारी आदि को पुरस्कृत किए जाने का वर्णन मिलता है। खेलौना सोहर का एक ही प्रकार है जिसमें भतीजे के जन्म के बाद ननद के उल्लास तथा ननद भाभी के नोक–झोंक का वर्णन रहता है।

मुंडन और उपनयन से संबंधित गीतों में पितर को मनाने का गीत, ब्रह्मा को मनाने का गीत तथा विभिन्न विधि से संबंधित गीत आते है। तथापि मानव जीवन का सर्वाधिक उल्लासमय पर्व विवाह संस्कार के अवसर पर गाये जाने वाला गीत सबसे प्रमुख है और लोकगीतकार विवाह के प्रत्येक विधि हेतु पृथक–पृथक गीत रचना करते रहे हैं और इन गीतों का अनन्त विस्तार दिखता है। विवाह के विधि में परिछन, नैना जोगिन, सिन्दुरदान, ओठंगर, मातृका पूजन, गठबन्धन, भामरी, पसाहिन,डहकन, उदासी और समदाउन आदि विशिष्ट प्रकृति के होते है। ये गीत मिथिला के सांस्कृतिक जीवन में इस कदर रच बस गये हैं कि दामाद को विदा करने की उदासी और बेटी को विदा करते समय का समदाउन किसी के भी हृदय को अधीर और आप्लावित कर देता है। विवाह के बाद के पर्व और संस्कारों में बरसाति, मधुश्रावणी, कोजागरा इत्यादि में गाये जाने वाले गीतों की अपनी ही विशेषता और महत्त्व है।

विशेष अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों को हम सामयिक गीत की श्रेणी में रख सकते है। प्रातः काल गाया जाने वाला गीत पराती कहलाता है तो संध्या काल गाया जाने वाला गीत मलार। दैनान्दिन जीवन का यह संगीत सामयिक परिवेश में और अधिक पल्लवित, पुष्पित हो उठता है। बसन्त पंचमी से शुरू हुआ होली गीत फागुन के अंतिम तक अपने पूरे रंग और चरम उत्साह में रहता है। रामनवमी तक चैतावर की बहार रहती है, सावन में झूलन का श्रृंगार, वर्षा भर कजरी, मलार, बारहमासा, आसिन में भगवती के प्रति उद्‌गार, कार्तिक में छठि मईया का अवतार और सामा–चकेबा और पूस में तुसारी का उत्साह रहता है। राह–बाट चलते गीत के प्रकार को बटगमनी कहते हैं और जाँत पीसते समय के गीत को लगनी। राधा–कृष्ण के नोक–झोंक से संबंधित गीत ग्वालरि कहलाता है तो मृत्यु से संबंधित गीत निगुर्ण। इसी तरह सामयिक गीतों के अनेक प्रकार प्रचलन में है। अगर संसार के अन्यान्य लोकगीत के संग मैथिली लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो मानव समाज में अपनत्व की भावना जग सकती है क्योंकि प्रत्येक समाज के लोकगीत का उत्स एक ही रंग में रंगे दिखते है। लोकगीत का अपार भंडार महिलाओं के कंठ *में* सुरक्षित रहता था और उनके पोथियों में संरक्षित। एक कंठ से दूसरे कंठ होते हुए कंठो के माध्यम से एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी लोकगीत की परम्परा हस्तांतरित होती रही। सामाजिक *परिवर्तन* के अनुसार लोकगीतों में भी *परिवर्तन* आता रहा। प्राचीन लोकगीतों में नई पीढ़ी के अनुसार *परिवर्तन* होते रहे है। उदाहरण स्वरूप–डोली कहारों की जगह अब मोटरकार ने ले ली है। टीवी, कम्प्यूटर, लैपटॉप, मोबाईल, इत्यादि को भी लोकगीतों में स्थान मिलने लगे है, *मैसेंजिंग* ऐप, व्हाट्स एप, फेसबुक, मैसेन्जर इत्यादि का भी जिक्र होने लगा है आज के लोकगीतों में फिल्मी धुनों पर आधारित लोकगीत भी गाये जा रहे *हैं*। रहन–सहन *में* बदलाव, आजीविका में बदलाव, वातावरण का बदलाव लोकगीत के गायकों को प्रभावित करते रहे हैं और इस तरह *लोकगीत* के बोलों और साधनों में भी बदलाव आते रहे हैं। पर इसके बावजूद भी *लोकगीत* का आधार हमेशा ही पारिवारिक और सामाजिक जीवन रहा है। बदलाव के बावजूद प्राचीन लोकगीतों का महत्व कम नहीं हुआ है। वह भी उतनी ही शिद्दत से गाये जाते है, जितने की नये। और अब तो नेटवर्किग साइट्स जैसे– यू–ट्यूब, फेसबुक, इस्टा0 इत्यादि के माध्यम से पूरी दुनिया हमारी *सांगितिक*, सांस्कृतिक परम्परा से परिचित हो रही है। पूरी दुनिया में इसका प्रचार–प्रसार हो रहा है। अगर छठ गीत की बात *करें* तो उसने विदेशियों को भी अपनी *ओर* आकर्षित किया है और वे बड़े चाव से इसे सुनते है और गाने की भी कोशिश करते है।

## निष्कर्ष

लोकगीत सामाजिक भावना, सामुहिक आनंद और *सांस्कृतिक प्रसंगों* से जुड़े रहते है। यह समाज की आत्मा है। जो भाव और आत्मीयता इसमें *सन्निहित* है वह भाव किसी दूसरे गीत प्रकार में नहीं पाया *जा सकता* है। लोक जीवन में प्रवाहमान, सहज और सरल भाषा तथा निरलंकृत भाव प्रवाह के कारण यह लोकमानस से निरंतर जुड़ा हुआ है। श्रुति माधुर्य और हृदयग्राहिता इस प्रकार के गीत की अन्यतम विशिष्टता हम भारतीयों को अपनी इस अपार गौरवपूर्ण *सांगितिक* एवं सांस्कृतिक सम्पदा पर गर्व होना चाहिए और इसके संकलन तथा विश्लेषण पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

## संदर्भ


1. मैथिली लोकगीत लेखक – डा० योगानन्द झा उर्वशी प्रकाशन, कंकड़बाग, पटना संस्करण वर्ष – 2009
2. आलेख संचयन लेखक – डा० योगानन्द झा प्रकाशक – मिथिला रिसर्च सोसाइटी कबिलपुर, लहेरियासराय संस्करण वर्ष – 2002
3. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह लेखक – डा० इन्द्रकान्त झा कमल प्रकाशन, नयाटोला पटना संस्करण वर्ष – 2001
4. राग परिचय, भाग – 1 लेखक – पं० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव प्रकाशक – संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद संस्करण वर्ष – 2003
5. राग परिचय, भाग – 2 लेखक – पं० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव प्रकाशक – संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद